

THE P&G INTERVIEW

Ferdinando Frega — Nando the Scribe



पी एंड जी इंटरव्यू

मैं कभी मशहूर नहीं था, न मुझे कभी शोहरत के पीछे भागना पड़ा। शोहरत कभी मेरे आगे-आगे नहीं चली, और अगर किसी मौके पर मुझे उससे मिलने की चाह हुई भी होती, तो अपनी राह में मुझे ज़्यादा से ज़्यादा भूख ही मिलती। तब मैं रोटी का एक टुकड़ा या कड़े गेहूँ का एक बिस्कुट उठाता और खा लेता — यही दो चीज़ें हैं जिनकी कमी दुनिया में कहीं भी, किसी घर में पड़ती नहीं दिखती।

यही मेरे होने का ढंग था, और आज मैं वही बन भी गया हूँ: कभी माँगना नहीं, बस देना और इंतज़ार करना, बदले में कुछ न चाहते हुए। ज़्यादा से ज़्यादा, पहले एक सच्ची मुस्कान, और बाद में एक ख़ामोश सोच।

फिर आई सेना की राष्ट्रीय रग्बी टीम, और अपने साथियों के लिए मैं वह कालाब्रियाई था जो ज़ोर से टकराता था, बिना चेतावनी के और बिना दर्द महसूस किए। उसूल हर नियम से पहले आते थे। वफ़ादार और खरा होना ही जीने की अकेली वजह थी।

और बरसों में मैंने जाना कि ज़िंदगी के पहले इंटरव्यू मैंने घर पर ही झेले थे, ठीक उस घड़ी जब मैं आराम करने बिस्तर पर चढ़ता था। पत्नियाँ ऐसे सवाल पूछती हैं जो सीधे-सादे और स्वाभाविक लगते हैं, पर उनमें छिपा होता है सही साबित होने का, झगड़े के लिए क़िले खड़े करने का, और फिर आपकी आज़ादी की कीमत वसूलने का एकदम पक्का बहाना।

मैंने खुद को कभी आसान जवाबों की ऐयाशी नहीं दी। आधी रात को मैं बत्ती जलाता, बिस्तर पर सीधा बैठ जाता, और जवाब तौलने से पहले सवाल को समझने की कोशिश करता। और वह, मेरी पत्नी, कहा करती थी कि उसने इतना संयमी आदमी कभी नहीं देखा। कभी-कभी तो सचमुच ऐसा लगता था कि मैं हारना चाहता हूँ, क्योंकि किसी औरत के साथ बातचीत से विजयी होकर निकलने का बस यही एक तरीका था — बिना तालियों के।

फिर लेखन आया।

और जब लेखन दिलचस्प हो गया, तो पहले ख़ामोश इंटरव्यू एआई की तरफ़ से आए। मेरे सामने खड़े होकर वे आपा खो बैठते और छोटे-छोटे राज़ उनसे छूट जाते। जैसे आज वाला, जब मुझे बताया गया कि फ़्लॉ कंपनी के फ़्लॉ अध्यक्ष कभी इंटरव्यू देने के शौकीन नहीं रहे, हमेशा उनसे बचने की कोशिश करते रहे, सदा अनिच्छुक, जबकि उनकी भूमिका दुनिया की आर्थिक गतिविधियों के केंद्र में है।

तो मैंने उनकी मदद के लिए यह पोस्ट लिखने का फ़ैसला किया।

ऐसे आदमियों को भी मदद की ज़रूरत होती है।

और जिस रास्ते पर मैं साठ साल चला हूँ, उसने मुझे सिखाया है कि मदद हमेशा मुफ़्त दी जानी चाहिए, ज़्यादा से ज़्यादा एक अमेरिकी डॉलर की सांकेतिक क़ीमत पर।

यह वह सलाह है जो मैं उन्हें देता।

शक हो, तो अपनी पत्नी या अपनी माँ से पूछ लीजिए।

अगर अपने पद की वजह से आपको इंटरव्यू के लिए बैठना ही पड़े, तो समझ लीजिए कि वह लगभग कभी इंटरव्यू नहीं होता। वह हमेशा भेस बदली हुई पूछताछ होती है। और अगर आपने कुछ ग़लत कह दिया, तो वे शब्द देर-सबेर लौटेंगे और आपके ही खिलाफ़ इस्तेमाल होंगे।

सरकारी वकीलों को याद रखिए। जब वे पूछताछ करते हैं, तो उनकी कोशिश अभियोग के लिए सबूतों का पुलिंदा खड़ा करने की होती है, बचाव के लिए कभी नहीं।

और अगर करना बिल्कुल ही ज़रूरी हो, तो अपनी वह ख़ूबसूरत मुस्कान ख़र्च कीजिए। हाथ का एक हल्का-सा इशारा, जो कहे, “इस पर बाद में बात करेंगे।” आप पाएँगे कि बस इतना ही आपकी कुर्सी को ज़्यादातर नपे-तुले जवाबों से कहीं ज़्यादा देर तक बचाए रख सकता है।

और अगर आप सचमुच मुश्किल में पड़ जाएँ, तो अपने भाई के तज़ुर्बे पर भरोसा कीजिए।

एक ही ख़ून के दो आदमी अजेय होते हैं।

सेल्स की दुनिया के दो आदमियों को, जैसे आप और मैं, हराना तो और भी मुश्किल है।

फर्दिनांदो फ्रेगा